क्या हमें सिर्फ आँखों देखी चीज़ों पर विश्वास करना चाहिए?

“परमेश्वर के वजूद पर शक करनेवाला इंसान सोचता है कि परमेश्वर और [हम इंसानों के] भविष्य के बारे में सच्चाई जानना नामुमकिन है, जिस बारे में ईसाई और दूसरे धर्म सिखाते हैं। वह यह भी कहता है, शायद आगे चलकर इस बारे में सच्चाई जानना मुमकिन हो, मगर फिलहाल तो यह एकदम नामुमकिन है।”
—सन् 1953 में कही तत्त्वज्ञानी बरट्रंड रसल की बात।

इस धारणा की शुरूआत थॉमस हक्सली ने की थी, जो जानवरों पर अध्ययन करनेवाला एक वैज्ञानिक था। उसका जन्म सन् 1825 में हुआ था। वह चार्ल्स डार्विन के समय में जीया था और विकासवाद की शिक्षा का बड़ा हिमायती था। सन् 1863 में, हक्सली ने लिखा कि उसे “ईसाइयों के इस दावे” का कोई सबूत नहीं मिला कि एक परमेश्वर है, “जो हमसे प्यार करता है और जिसे हमारी परवाह है।”

आज बहुत-से लोग, हक्सली जैसे मशहूर लोगों की धारणाओं को मानते हैं। उनका कहना है कि वे सिर्फ उन्हीं चीज़ों पर विश्वास करते हैं, जो दिखायी देती हैं। वे यह भी कहते हैं कि ऐसी किसी चीज़ या शख्स के वजूद पर विश्वास करना, जिसका कोई सबूत न हो, नासमझी है।

क्या बाइबल कहती है कि हमें परमेश्वर के वजूद पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेना चाहिए? जी नहीं, बाइबल ऐसा बिलकुल नहीं सिखाती। इसके उलट, यह सिखाती है कि किसी की बातों को बिना सबूत के मान लेना अंधविश्वास ही नहीं, बेवकूफी भी है। बाइबल कहती है: “भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है।”—नीतिवचन 14:15.

तो फिर, परमेश्वर पर विश्वास करने के बारे में क्या? क्या इस बात का कोई सबूत है कि परमेश्वर सचमुच वजूद में है? और अगर यह मान भी लिया जाए, तो क्या यह साबित किया जा सकता है कि वह हमसे प्यार करता है और उसे हमारी परवाह है?

परमेश्वर के गुण उसकी सृष्टि से ज़ाहिर होते हैं

बाइबल का एक लेखक पौलुस एक बार अथेने के बड़े-बड़े ज्ञानियों से बात कर रहा था, जो बड़े शक्की मिज़ाज के थे। उसने उनसे कहा कि परमेश्वर ने “पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया” है। फिर उसने उन्हें बताया कि परमेश्वर को हम इंसानों में दिलचस्पी है और “वह हम में से किसी से दूर नहीं।”—प्रेरितों 17:24-27.

पौलुस को इस बात का यकीन क्यों था कि परमेश्वर वजूद में है और उसे इंसानों में दिलचस्पी है? इसकी एक वजह उसने उस खत में बतायी, जो उसने रोम में रहनेवाले अपने साथी

बाइबल यह नहीं कहती कि हमें परमेश्वर के वजूद पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेना चाहिए

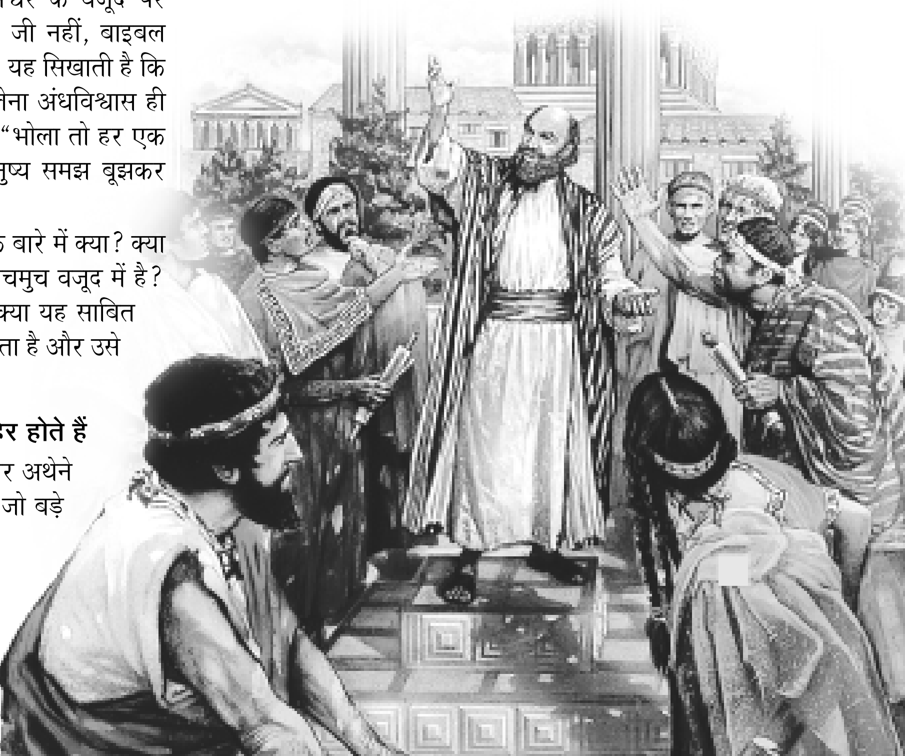

मसीहियों को लिखा था। उसने कहा: "[परमेश्वर] के अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं।" —रोमियों 1:20.

आगे के लेखों में हम परमेश्वर के तीन गुणों पर गौर करेंगे, जो उसकी रचनाओं से साफ ज़ाहिर होते हैं। इन रचनाओं की जाँच करते वक्त खुद से पूछिए, 'परमेश्वर के गुणों के बारे में सीखने से मुझ पर क्या असर होता है?'

परमेश्वर की बुद्धि
कुदरत में देखी जा सकती है

"[वह] हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता, और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि देता है।"—**अय्यूब 35:11.**

पक्षियों में गज़ब की काबिलीयतें होती हैं। वे आसमान में ऐसे कमाल के करतब दिखाते हैं कि हवाई जहाज़ बनानेवाले भी दाँतो तले उँगली दबा लेते हैं। कुछ पक्षी तो समंदर के ऊपर से उड़ते हुए हज़ारों किलोमीटर का लंबा सफर तय करते हैं। हालाँकि उन्हें दिशा दिखाने के लिए कोई निशान नहीं होता, फिर भी वे बिना भटके अपनी मंज़िल तक पहुँच जाते हैं।

पक्षियों में एक और बेमिसाल काबिलीयत होती है, जिससे उनके बनानेवाले की बुद्धि ज़ाहिर होती है। वह यह कि वे अलग-अलग आवाज़ें निकालकर और गाने गाकर एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। आइए ऐसे कुछ पक्षियों की मिसाल पर गौर करें।

पंछियों की गुफ्तगू

कुछ पक्षी ऐसे होते हैं, जिनके चूज़े अंडे से बाहर निकलने से पहले ही बातचीत करने लगते हैं। ऐसी ही एक चिड़िया है, बटेर। एक मादा बटेर करीब आठ अंडे देती है। मगर वह सारे अंडे एक-साथ नहीं देती, बल्कि हर दिन एक अंडा देती है। ज़रा सोचिए, अगर अंडों के अंदर चूज़ों को बढ़ने में बराबर का वक्त लगे, तो एक दिन में एक ही अंडे में से चूज़ा निकलेगा। इस तरह सारे चूज़ों को निकलने में आठ दिन लगेंगे। इन आठ दिनों के दौरान मादा बटेर को कितनी मुश्किल होगी, क्योंकि एक तरफ उसे चूज़ों की देखभाल करनी होगी और दूसरी तरफ बचे हुए अंडों को सेना भी होगा। मगर शुक्र है कि मादा को ऐसी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। क्योंकि होता यह है कि आठों अंडों से चूज़े एक ही दिन में छः घंटे के अंदर बाहर निकल आते हैं। यह कैसे मुमकिन होता है? खोजकर्ता बताते हैं कि इसकी खास वजह यह है कि बटेर के चूज़े जब अंडे में ही होते हैं, तभी वे एक-दूसरे से गुफ्तगू करने लगते हैं। वे ऐसी योजना बनाते हैं कि सभी चूज़े करीब-करीब एक ही समय में अंडों से बाहर निकल आते हैं।

पक्षियों में एक गौर करने लायक बात यह है कि जब उनके चूज़े बड़े होते हैं, तो उनमें से नर पक्षी आम तौर पर गाना गाते हैं। नर खासकर सहवास के मौसम में मादा को रिझाने और अपने घोंसले का इलाका तय करने के लिए ऐसा करता है। पक्षियों की हज़ारों जातियों में से हरेक जाति की अपनी एक अनोखी भाषा होती है। इससे मादा पक्षी को अपनी ही जाति का एक साथी ढूँढ़ने में मदद मिलती है।

पक्षी आम तौर पर सवेरे-सवेरे और शाम के वक्त गाना गाते हैं। इसके पीछे एक खास वजह होती है। वह यह कि इस समय हवा हौले-हौले चलती है और कोई शोर-शराबा भी नहीं होता है। खोजकर्ताओं ने पता लगाया है कि सुबह और शाम के वक्त पक्षियों के गाने की आवाज़, दिन के मुकाबले 20 गुना ज़्यादा साफ सुनायी देती है।

हालाँकि गाना तो ज़्यादातर नर पक्षी ही गाता है, मगर नर और मादा दोनों तरह-तरह की आवाज़ें निकालते हैं। और

परमेश्वर का प्यार
माँ के प्यार से झलकता है

"क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता।"—**यशायाह 49:15.**

एक माँ जब अपने नए जन्मे बच्चे को दूध पिलाती है, तब बच्चा अपनी माँ की गोद में कितने चैन से रहता है। यह देखकर हमें प्यार और कोमलता का क्या ही मीठा एहसास होता है! पैम नाम की एक माँ कहती है: "जब मैंने पहली बार अपने मुन्ने को अपनी गोद में उठाया, तो मेरा दिल प्यार से उमड़ने लगा। साथ ही, मुझे एहसास हुआ कि इस नन्ही-सी जान की परवरिश करना कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है।"

सभी जानते हैं कि एक बच्चे के विकास का दारोमदार काफी हद तक इस बात पर होता है कि उसकी माँ उससे कितना प्यार करती है। और खोजबीन से भी यह बात सच साबित हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मानसिक स्वास्थ्य पर एक कार्यक्रम चलाया और उसका नतीजा एक लेख में छापा। उस लेख में यह लिखा है: "अध्ययनों से पता चला है कि जिन नन्हे-मुन्नों को उनकी माँ छोड़कर चली जाती है या जिन्हें उनकी माँ से जुदा कर दिया जाता है, वे थोड़े बड़े होने पर दुःखी और निराश रहते हैं। और कभी-कभी तो वे छोटी-छोटी बातों से बहुत डर जाते हैं।" इस लेख में ज़िक्र किया गया एक और अध्ययन दिखाता है कि जिन बच्चों को छुटपन से प्यार किया जाता है और जिन्हें परवाह दिखायी जाती है, वे उन बच्चों के मुकाबले ज़्यादा होशियार और तेज़ दिमागवाले होते हैं, जिन्हें नज़रअंदाज़ किया जाता है।

एक माँ अपने बच्चे से जितना प्यार करती है, उससे कहीं ज़्यादा परमेश्वर हमसे प्यार करता है और उसका प्यार हमेशा बना रहेगा

माँ का प्यार कितना मायने रखता है, इस बारे में ऐलन शोर, जो अमरीका में चिकित्सा के यू.सी.एल.ए. स्कूल में मनोरोग-विज्ञान के प्रोफेसर हैं, कहते हैं: "एक बच्चे का पहला रिश्ता अपनी माँ के साथ जुड़ता है। यह रिश्ता एक साँचे का काम करता है, जिसमें ढलकर वह दूसरों के साथ मधुर रिश्ता बनाने के काबिल बनता है।"